हिंसा और धार्मिक कट्टरता पर हम औरतों की सोच

कमला भसीन

आज हमारे चारों ओर धर्म के नाम से राजनीति खेली जा रही है और धर्म का नाम लेकर हिंसा फैलाई जा रही है। आज हमें सोचना है कि हम धर्म किसे मानते हैं और हिंसा के प्रति हमारा क्या रवैया है। गांधी, बुद्ध, नानक, महावीर, निज़ामुद्दीन औलिया, अजमेर वाले ख्वाजा, कबीर, मीराबाई के देश में आज जो धार्मिक कट्टरता फैलाई जा रही है उसके खिलाफ़ नं बोलने का मतलब है बर्बादी, शान्ति और चैन की बर्बादी, हमारी गंगा जमुनी संस्कृति की बर्बादी, सर्वधर्म समभाव के विचार की बर्बादी, हिंदुस्तान के सब धर्मों को अपनाने वाली ख़ासियत की बर्बादी।

इसी संदर्भ में मैं आज 'सबला' के पाठकों के सामने हिंसा, मर्दानगी और धार्मिक कट्टरता पर अपने कुछ विचार रख रही हूं। मेरा यह मानना है कि समझदार, अहिंसा वादी, कोमल दिल वाले मर्दों को हिंसा के खिलाफ आवाज उठानी होगी। उन्हें यह कहना और दिखाना होगा कि मर्दानगी का मतलब अक्खड़पन, लड़ाकूपन, हिंसा, औरों को डराना-धमकाना नहीं होता।

हिंसा के संस्कार

हम यह मानते हैं कि हिंसा सिर्फ मर्द ही नहीं करते। औरतें भी हिंसा कर सकती हैं, ज़हर फैला सकती है। आजकल कई सांप्रदायिक दल औरतों को अपने साथ ले रहे हैं। कई औरतें हिंसा करने के लिए लोगों को उकसाती हैं, पर फिर भी ये संख्या में बहुत कम हैं। अपने दलों में इनकी ताक़त भी कम है। निर्णय लेने वाले लगभग सभी पुरुष हैं।

प्रकृति से नहीं, अपने अनुभव की वजह से औरतें कम आक्रामक और हिंसात्मक होती है। उन्हें शुरू से ही नम्र, शांत, अनाक्रामक होने की शिक्षा दी जाती है। 'तू लड़की है, तू भाई को क्यों मारती है', 'तू झगड़ालू बनेगी तो ससुराल में हमारी नाक कटाएगी' यह कह कर लड़कियों को गुस्सा पीना सिखाया जाता है।

निम्न, मध्य और मध्यमवर्ग के परिवारों में लड़कियों को किसी प्रकार का शारीरिक व्यायाम करने का भी मौका नहीं मिलता। इसलिए वे शरीर से भी किसी का मुकाबला करने के काबिल नहीं होतीं। आक्रमण करने का तो सवाल ही नहीं उठता। अक्सर वे घरेलू हिंसा का भी शिकार होती हैं और

उन्हें शिक्षा दी जाती है धरती जैसे सब कुछ सहने की। यह सारी शिक्षा और औरतों का दूसरों पर निर्भर रहना उन्हें शक्तिहीन बना देता है।

मर्दानगी

इसके अलावा हिंसा और लड़ाकूपन औरतों की प्रकृति के खिलाफ माना जाता है। अगर कोई स्त्री निर्भय, आज़ाद व हिम्मतवाली होती है तो उसे मर्दाना कहा जाता है। पुरुषों से मुकाबला करने वाली औरत की इज्ज़त ताकतवर औरत कह कर नहीं बल्कि उसे मर्द कह कर की जाती है। उदाहरण के रूप में देखिए "खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।" इन्दिरा गांधी के लिए कहा जाता था कि "केबिनट में सिर्फ वही मर्द थीं"। इन्हीं सब कारणों से औरतों का हिंसा भड़काने और करने में कम हाथ होता है।

दूसरी ओर ताक़त, लड़ने की शक्ति, आक्रामकता, बदला लेने की क्षमता, मारने या मरने की हिम्मत ये सब मर्दों के 'गुण' कहलाते हैं। ये मर्दानगी का दूसरा नाम है। जो मर्द अक्खड़, लड़ाकू, आक्रामक नहीं होते, उनका "औरतों जैसा है" कह कर मजाक उड़ाया जाता है। उन्हें कहा जाता है "चूड़ियां पहन कर घर बैठ जाओ"। योद्धा, धरती-पुत्र आदि की मानसिकता अखाड़ों में उभारी जाती है, जहां पुरुषों को सिखाया जाता है "पुरुषत्व" या "मर्दानगी"।

हमारे अनुभव, हमारी सोच

हम औरतें जो हिंसा को नज़दीक से देख चुकी हैं, इस प्रकार के मर्दों और हिंसा के खिलाफ हैं। जब हम हिंसा के खिलाफ बोलती हैं तो हम इस तरह की हिंसात्मक मर्दानगी की भी निन्दा करती हैं। हम मर्दों की हिंसा की यश गाथाओं के खिलाफ हैं। आक्रामक पुरुषत्व की प्रशंसा के खिलाफ हैं क्योंकि हम जानती हैं कि मर्दानि या आक्रामक मर्द किसी के भी रक्षक नहीं हो सकते। वो अपनी ताक़त से इतने बौरा से जाते हैं कि उनके लिये उचित-अनुचित का भेद करना मुश्किल हो जाता है।

हम आक्रामक मर्दानगी के खिलाफ हैं क्योंकि हम जानते हैं कि ऐसे मर्द कभी भी दूसरों को अपने बराबर नहीं मानते, खासतौर से औरतों को नहीं। वे केवल रक्षक, स्वामी, पति, मालिक हो सकते हैं, साथी नहीं। हम सदियों के अपने अनुभवों से जानती हैं कि कितनी जल्दी ऐसे मर्दों के हाथ अपने से कमज़ोर लोगों पर उठ जाते हैं, चाहे वो उनके नौकर हों, बच्चे हों या पत्नी।

पत्नी के ऊपर हाथ उठाना उनके लिए आसान सिर्फ इसलिए नहीं होता क्योंकि वे ताक़तवर होते हैं, बल्कि इसलिए भी होता है क्योंकि उन्हें पितृसत्तात्मक समाज की इजाज़त और शह होती है। एक ऐसी विचारधारा की शह होती है जो औरत को मर्द से कमतर मानती है, जो मर्द को मालिक, स्वामी, पति मानती है।

गलत विचारधाराएं

बहुत से धार्मिक ग्रंथ मर्दों को अधिकार देते हैं दासों, औरतों और बच्चों के साथ एक सा व्यवहार करने का, उन्हें अपनी संपत्ति समझने का। मनु ने भी कहा कि हर आयु की औरत को हमेशा किसी पुरुष के आधीन रहना और रखना चाहिए। ऐसी विचारधाराएं हम औरतों के लिए जानलेवा बन गई हैं। इनका असर हमारी रोज़मर्रा की घरेलू ज़िंदगी पर पड़ता है।

खोमेनी के ईरान में उलेमा और राज्यसत्ता दोनों ने हर मर्द को अपनी औरतों को मार-पीट कर "रास्ते पर लाने का" अधिकार दे दिया था। अपने ही देश में किए गए सर्वेक्षणों से हमें पता चलता है कि हमारे परिवारों में औरतों पर कितनी हिंसा होती है, कितनी औरतों को तरह-तरह की अग्नि परीक्षा देने पर मजबूर किया जाता है।

हम औरतें मतभेदों को हिंसात्मक तरीकों से सुलझाने के खिलाफ हैं, चाहे ये मतभेद परिवार में हों, समाज में हो या राजनीति में। एक बार पनपने पर हिंसा की प्रवृति घर के बाहर तक ही सीमित नहीं रहती, उसका असर जीवन के हर पहलू पर पड़ता है, खासतौर से परिवार और स्त्री-पुरुष संबंधों पर।

नारीवादी सोच

बहुत से मर्द हिंसा की निन्दा करते हैं, लेकिन वे समाज में होने वाली हिंसा और पारिवारिक हिंसा के बीच क्या संबंध हैं इसकी बात नहीं करते। इसी प्रकार ज़्यादातर लोग जो प्रजातंत्र और समता की बात करते हैं वे परिवार में प्रजातंत्र और समता की बात नहीं करते। नारीवादी सोच की यही खासियत है कि हम समाज और परिवार, सार्वजनिक और व्यक्तिगत को जोड़ कर देखते हैं। अहिंसा की राजनीति के बिना प्रजातंत्र कहीं भी जी और पनप नहीं सकता, न परिवार में, न गांव में, न देश में और न ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर। □